This question paper contains **2** printed pages]

AA—531—2016

FACULTY OF ARTS

B.A. (Third Year) (Sixth Semester) EXAMINATION

OCTOBER/NOVEMBER, 2016

(Old Course)

ENGLISH (Optional)

Paper-XIV

(Translation : Theory and Practice)

(Saturday, 26-11-2016) **Time : 10.00 a.m. to 12.00 noon**

Time—2 *Hours* *Maximum Marks*—40

N.B. :— (*i*) *All* questions are compulsory.

(*ii*) Figures to the right indicate full marks.

1. Write a detailed note on the problems of translating literary texts. 10

Or

Dilip Chitre's *Says Tuka* as a Target Language text. Elaborate.

2. Discuss the challenges and remedies in translation. 10

Or

Critically examine Jai Ratan's translation of Kamleshwar's story *Hail Freedom*.

3. Compare the structures of English and Marathi languages. 10

Or

Evaluate Frances Pritchett's translation of *Kafan*.

4. Translate the following passage into English : 10

एक निर्धन महिला एक बार बुद्ध के पास आई और उसने उनसे कहा कि क्या वे उसके मृत बच्चे को पुनर्जीवित करने की दवा दे सकते हैं। स्त्री के अत्यधिक दु:ख से महात्मा बुद्ध दु:खी हुए। वे उससे बोले कि केवल एक दवा है जिससे तुम्हारा बेटा पुनर्जीवित हो सकता है। उन्होंने उसको आदेश दिया कि तुम उस घर से एक मुट्ठी सरसों के दाने (बीज) लाओ जिसमें मृत्यु का कभी

P.T.O.

प्रवेश नहीं हुआ है। शोकमग्न माँ द्वार-द्वार गई और सरसों के दाने माँगे, परन्तु हर द्वार पर उसको शोकपूर्ण उत्तर मिले! एक ने कहा, ''मेरे पति की मृत्यु हो गई'', दूसरे ने कहा 'गत वर्ष हमारा सबसे छोटा बच्चा मर गया।' वह भारी मन से महात्मा के पास लौट आई और अपनी खोज का परिणाम बताया। तब बुद्ध ने करुणापुर्ण शब्दों में उससे कहा कि उसको अपने दु:ख के विषय में अधिक नहीं सोचना चाहिए, क्योंकि शोक और मृत्यु सबके साथ जुड़े हैं।

Or

एखाद्या कार्यालयात कामकाजाच्या स्वरूपानुसार अनेक विभाग, उपविभाग कार्यरत असतात. त्यांच्यातील अन्तर्गत पत्रव्यवहार पारदर्शक आणि वस्तुनिष्ठ व्हावा म्हणुन प्रत्येक बाब लेखी स्वरूपात होत असते. लेव्हा एका विभागाने दुसऱ्या विभागाला विचारलेली माहिती लेखी स्वरूपात्तच कळविली जाते. अशा प्रकारच्या अन्तर्गत पत्रव्यवहारात जी टिप्पणी लिहिली जाते, तिला अंतर्गत टिप्पणी असे म्हणतात. अशी टिप्पणी ही तात्कालिक, प्रासंगिक स्वरूपाची असते. अन्तर्गत व्यवहार पुर्ण झाल्यावर तिचे महत्व उरत नाही. म्हणुन ती जपुन ठेवण्याची आवश्यकता जसते.

81641ADF8B6870D78C2FDF5EFEE07FB1